संत कबीर और भारतीय समाज में सुधारवादी चेतना: भक्ति आंदोलन के संदर्भ में एक अध्ययन

बबीता कुमारी, शोधकर्ता, हिंदी विभाग, यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर, (राजस्थान)

शोध-सार

संत कबीर भारतीय भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत-कवियों में से एक थे, जिन्होंने अपनी वाणी के माध्यम से मध्यकालीन भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक विषमताओं, धार्मिक आडंबरों, जातिगत भेदभाव तथा रूढ़िवादी मान्यताओं का प्रखर विरोध किया। उनकी विचारधारा का मूल आधार मानवतावाद, सामाजिक समानता, प्रेम, सहिष्णुता और आध्यात्मिक चेतना था। कबीर ने निर्गुण भक्ति के माध्यम से ईश्वर की सर्वव्यापकता पर बल दिया तथा हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों में प्रचलित बाह्य कर्मकांडों एवं संकीर्ण धार्मिक दृष्टिकोण की आलोचना की। उन्होंने जाति, धर्म और सामाजिक प्रतिष्ठा के आधार पर मनुष्य के बीच किए जाने वाले भेदभाव को अस्वीकार करते हुए मानवीय मूल्यों को सर्वोपरि माना।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य भक्ति आंदोलन के व्यापक संदर्भ में संत कबीर की सुधारवादी चेतना का विश्लेषण करना तथा भारतीय समाज पर उनके विचारों के सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभावों को समझना है। इस अध्ययन में कबीर की साखियों, सबदों और दोहों के माध्यम से उनकी सामाजिक दृष्टि, धार्मिक समन्वय की भावना तथा समानतामूलक समाज की अवधारणा का विवेचन किया गया है। कबीर की वाणी तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था की विसंगतियों को उजागर करने के साथ-साथ व्यक्ति को आत्मचिंतन, विवेक और नैतिक आचरण की प्रेरणा भी देती है। उनकी सुधारवादी चेतना केवल धार्मिक क्षेत्र तक सीमित नहीं थी, बल्कि उसमें सामाजिक न्याय, मानवीय गरिमा और समतामूलक जीवन-दृष्टि के व्यापक तत्व निहित थे।

वर्तमान समय में भी जातिगत भेदभाव, धार्मिक असहिष्णुता और सामाजिक विभाजन जैसी चुनौतियों के संदर्भ में कबीर के विचार प्रासंगिक बने हुए हैं। निष्कर्षतः, संत कबीर की वाणी भारतीय समाज में समतामूलक चेतना, सामाजिक सुधार और मानवीय एकता की स्थापना के लिए एक महत्त्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रस्तुत करती है। उनका चिंतन भक्ति आंदोलन की सुधारवादी परंपरा को समझने के साथ-साथ समकालीन समाज में सह-अस्तित्व और सामाजिक सद्भाव की संभावनाओं को भी रेखांकित करता है।

प्रमुख शब्द: संत कबीर, भक्ति आंदोलन, सुधारवादी चेतना, सामाजिक समानता, निर्गुण भक्ति, जातिगत भेदभाव, धार्मिक आडंबर, मानवतावाद, सामाजिक समरसता, भारतीय समाज।